



न्याय दीपिका: प्रमाण का स्वरूप

आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति कृत
'प्रमाण सामान्य प्रकाश' का
तार्किक विश्लेषण

सम्यग्ज्ञानं प्रमाणं — एक दार्शनिक विच्छेदन

प्रमाण का लक्षण

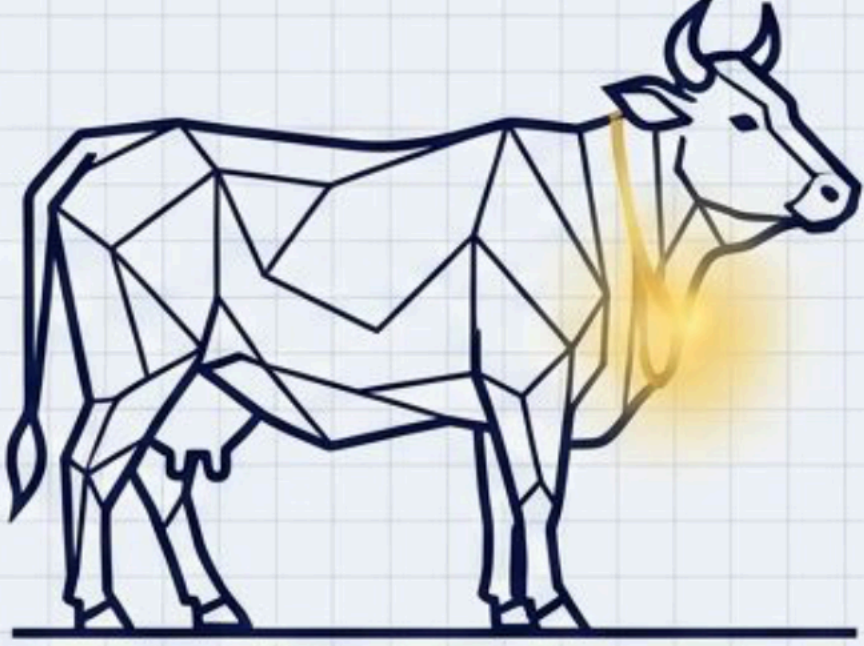
$$\begin{array}{c} \text{सम्यक्} \\ \text{(यथार्थ / Flawless)} \end{array} + \begin{array}{c} \text{ज्ञानम्} \\ \text{(जानने का साधन /} \\ \text{Instrument of Knowledge)} \end{array} = \begin{array}{c} \text{प्रमाणम्} \\ \text{(सच्चा ज्ञान /} \\ \text{Valid Knowledge)} \end{array}$$

लक्षण (Definition): सम्यक् ज्ञान
(वह जो वस्तु को अन्य से अलग करें)।

लक्ष्य (Target): प्रमाण
(जिसकी पहचान की जा रही है)।

Insight: एक निर्दोष लक्षण अतिव्याप्ति
(over-applicability) आदि दोषों से
रहित होना चाहिए।

निर्दोष लक्षण की अनिवार्यता



दृष्टान्त: गाय का लक्षण

दोषपूर्ण: "चार पैर होते हैं" (अतिव्याप्ति दोष - भैंस के भी होते हैं)।

निर्दोष: "सास्नादिमत्वं" (गले में झालर का लटकना)। यह केवल गाय में होता है, जो उसे अन्य पशुओं से व्यावृत्त (अलग) करता है।



दृष्टान्त: अग्नि का लक्षण

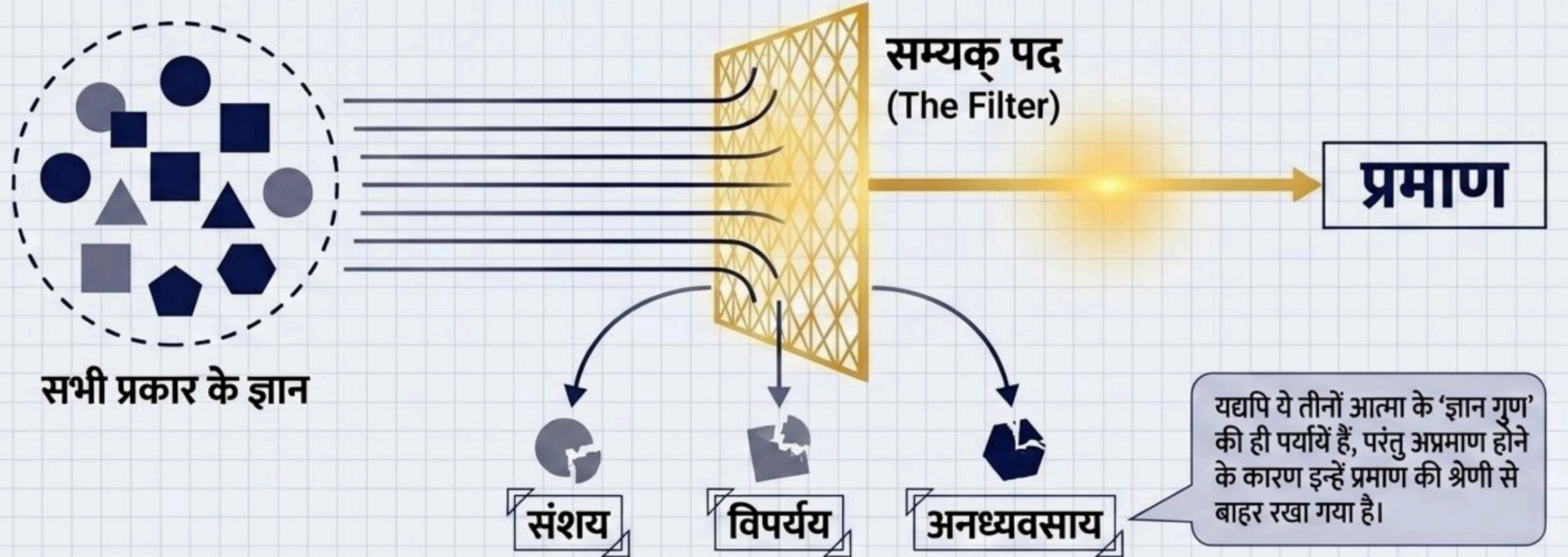
दोषपूर्ण: "तापमान" (बल्ब या शरीर में भी ताप होता है)।

निर्दोष: "उष्णता" (जलाने वाली विशिष्ट गर्माहट)।

निष्कर्ष: सम्यक् ज्ञान प्रमाण का निर्दोष लक्षण है, जो उसे अप्रमाण ज्ञानों से स्पष्ट रूप से अलग करता है।

‘सम्यक्’ पद का प्रयोजन

सूत्र में ‘सम्यक्’ (यथार्थ) शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है ताकि ज्ञान की श्रेणी में आने वाले उन तीन दोषों का निराकरण किया जा सके जो ‘अप्रमाण’ हैं।



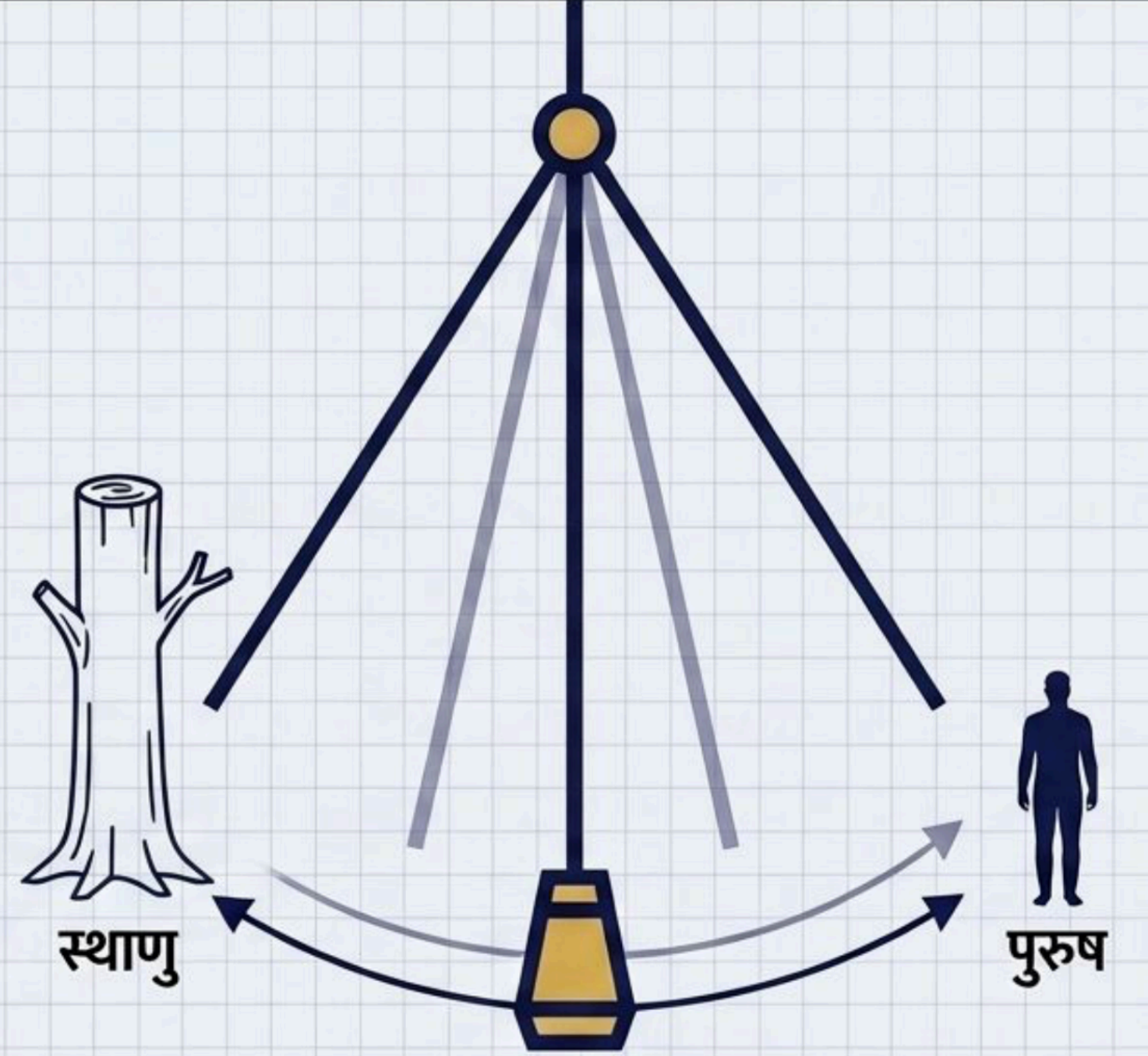
दोष १: संशय

सूत्र: विरुद्ध अनेक कोटि स्पर्शी ज्ञानम्
संशयः

स्वरूप: ऐसा ज्ञान जो विरुद्ध और अनेक संभावनाओं के बीच डोलता रहता है (अनिर्णयात्मक)।

कारण (Mechanics):

- क्या दिखा: साधारण धर्म (Common traits like height/width).
- क्या नहीं दिखा: विशेष धर्म (Specific traits like a head/hands or crookedness).
- अभाव: साधक या बाधक प्रमाण का अभाव।



उदाहरण: "क्या यह स्थाणु (टूँठ) है या पुरुष?"

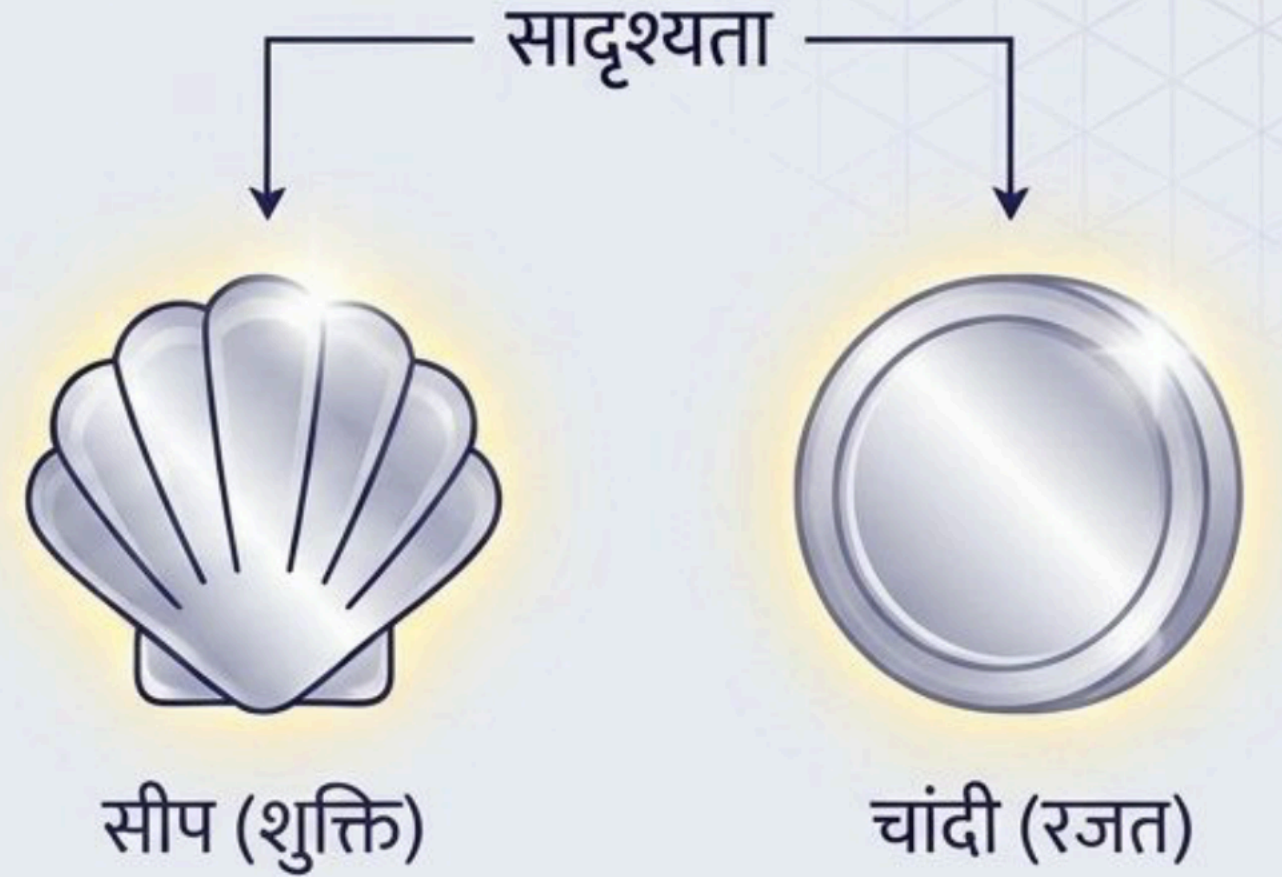
दोष २: विपर्यय

सूत्र: विपरीत एक कोटि निश्चय: विपर्यय:

स्वरूप: वस्तु जैसी नहीं है, उसमें वैसा ही दृढ़ और विपरीत निश्चय कर लेना। (संशय के विपरीत, यह निर्णयात्मक है, पर गलत है)।

कारण: सादृश्यता (Superficial similarity, e.g., the bright shine/चाकचक्य of both shell and silver).

उदाहरण: सीप (शुक्ति) में चांदी (रजत) का दृढ़ भ्रम हो जाना।



आध्यात्मिक चेतवानी: संशय से अधिक घातक विपर्यय है। शरीर (अचेतन) को ही आत्मा (चेतन) मान लेना सबसे बड़ी विपरीतता है।

दोष ३: अनध्यवसाय

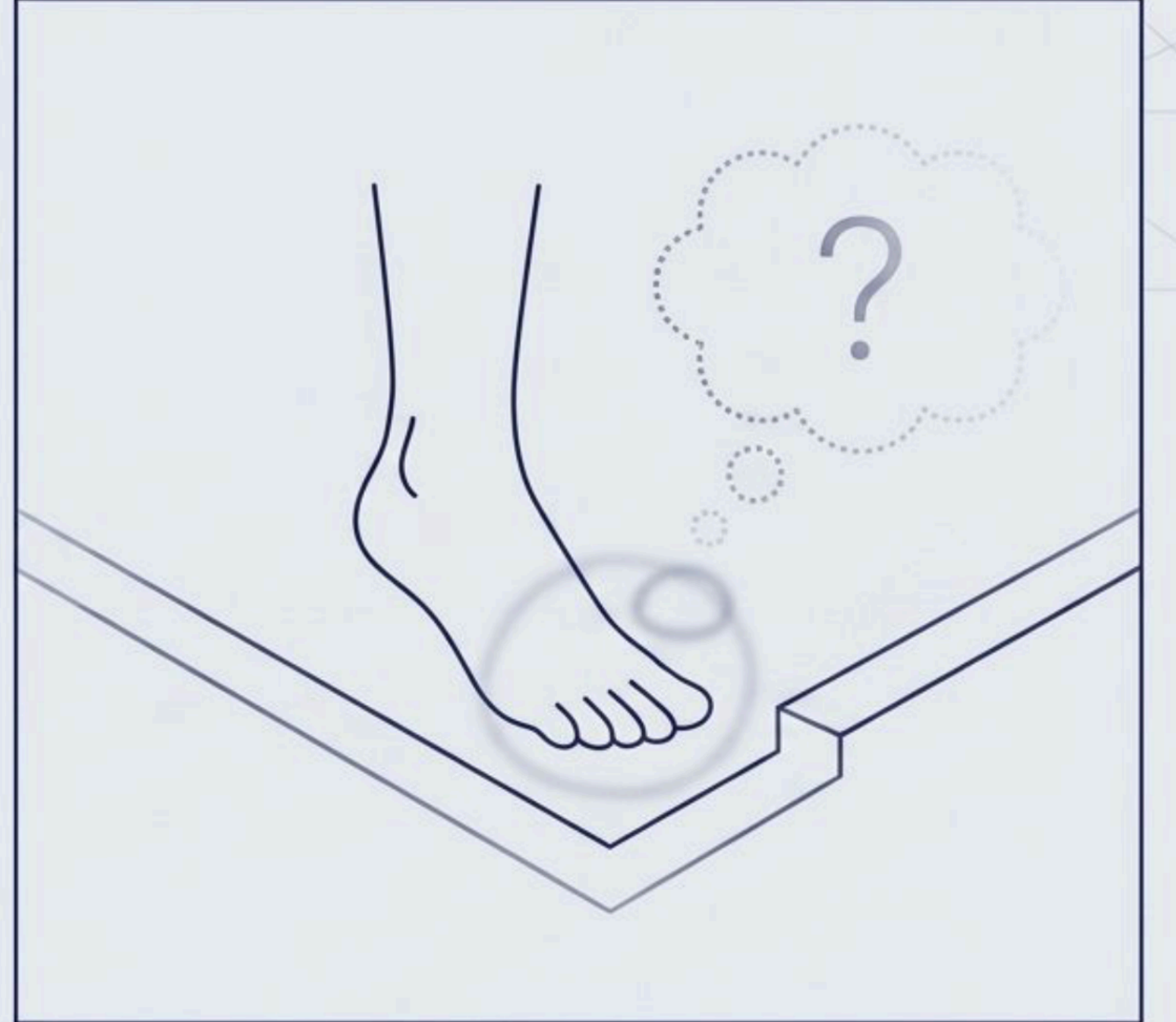
सूत्र: किम् इति आलोचन मात्रम् अनध्यवसायः

स्वरूप: "कुछ है" — मात्र ऐसा जानना, बिना किसी निर्णय या जानने की इच्छा (जिज्ञासा) के।

कारण: जानने की इच्छा (जिज्ञासा) का अत्यंत अभाव और विषय पर ध्यान केंद्रित न होना।

उदाहरण: मार्ग पर चलते हुए पैर के नीचे तिनके या कंकड़ का मात्र आभास होना, और बिना देखे आगे बढ़ जाना।

Insight: प्रवचन सुनते समय "कुछ तो कहा जा रहा है" ऐसा आभास होना, लेकिन विषय को समझने का कोई प्रयास न करना भी अनध्यवसाय है।



ज्ञान के तीन दोष: एक तुलनात्मक विश्लेषण

	संशय	विपर्यय	अनध्यवसाय
स्वरूप	अनिर्णयात्मक, डोलता हुआ	निर्णयात्मक, परंतु विपरीत	अनिर्णयात्मक, जिज्ञासा रहित
कारण	साधारण धर्म का ज्ञान, विशेष धर्म का अज्ञान	सादृश्यता (चमक आदि) के कारण भ्रम	वस्तु से प्रयोजन या जिज्ञासा का अभाव
लौकिक उदाहरण	"यह ठूठ है या पुरुष?"	सीप को चांदी मानकर उठा लेना	रास्ते में कंकड़ चुभने पर बिना ध्यान दिए चलना
आध्यात्मिक प्रभाव	"आत्मा है भी या नहीं?"	शरीर को ही आत्मा मान लेना (सबसे घातक)	"आत्मा की चर्चा से हमें क्या?" (उपेक्षा)

'ज्ञान' पद का प्रयोजन

सूत्र में 'प्रमाण' के लक्षण के रूप में 'ज्ञान' शब्द का प्रयोग तीन विशिष्ट तत्त्वों को लक्षण से बाहर रखने (व्यावृत्त करने) के लिए किया गया है।

प्रमाता (The Knower):
जानने वाला
जीव/आत्मा।

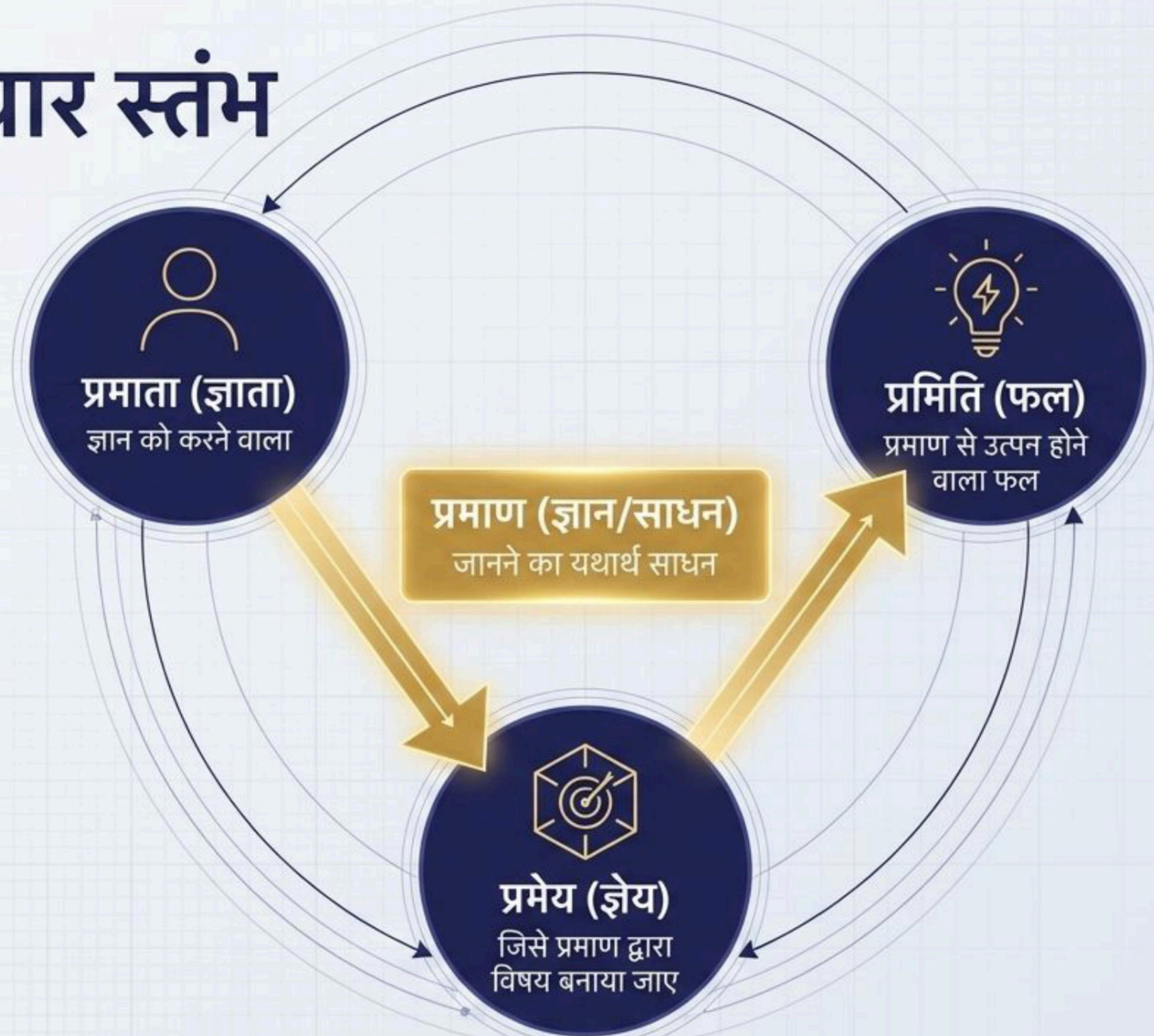
प्रमेय (The Object):
जिसे जाना
जा रहा है।

ज्ञानम्
(Instrument)

प्रमिति (The Result):
ज्ञान का फल।

Key Insight: 'ज्ञान' पद यह सुनिश्चित करता है कि प्रमाण 'जानने की प्रक्रिया या साधन' है, न कि जानने वाला, न ही जानी जाने वाली वस्तु।

ज्ञान के चार स्तंभ



व्याकरण का रहस्य: करण साधन

न्याय दीपिका में 'ज्ञान' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?
ज्ञान की तीन व्युत्पत्तियाँ (Grammatical derivations) संभव हैं:

१. कर्तृ साधन: “जो जानता है” (ज्ञाता / प्रमाता)।
[सूत्र में यह विवक्षित नहीं है]

२. भाव साधन: “जानना मात्र” (क्रिया / प्रमिति)।
[सूत्र में यह विवक्षित नहीं है]

३. करण साधन (The Chosen Lens): “ज्ञायते अनेन
इति ज्ञानम्” - जिसके द्वारा जाना जाता है।



Takeaway: आचार्य ने करण साधन का प्रयोग किया है। जिस प्रकार मूर्तिकार छेनी (साधन) से मूर्ति गढ़ता है, वैसे ही प्रमाता (आत्मा) जिस 'साधन' से वस्तु को जानता है, वह ज्ञान (प्रमाण) है।

अन्तिम फल: प्रमिति

प्रमाण का अंतिम लक्ष्य क्या है? प्रमाण से प्रमिति (निर्णयात्मक जानकारी / ज्ञप्ति) पैदा होती है।



कथंचित् भिन्न, कथंचित् अभिन्न



कथंचित् भिन्न (Somewhat different):



साधन (प्रमाण) अलग है और उसका फल (प्रमिति) अलग है।

कथंचित् अभिन्न (Somewhat identical):



दोनों ही आत्मा के ज्ञान गुण की एक समय की पर्याय हैं। जिस समय ज्ञान वस्तु को यथार्थ जानता है, उसी क्षण प्रमाण और प्रमिति दोनों एक साथ, एक ही आत्मा में घटित होते हैं।

निष्कर्ष: सम्यग्ज्ञान ही प्रमाण का निर्दोष लक्षण है ।



आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति का यह सूत्र मात्र एक परिभाषा नहीं,
बल्कि सत्य को अनुभव करने की वैज्ञानिक प्रक्रिया है।